

प्रजातन्त्र में महिला सशक्तिकरण तथा राष्ट्र के विकास में डॉ. अम्बेडकर के विचार

सुमित्रा बेनल*

डॉ. आम्बेडकर ने बंबई की एक महिला सभा को संबोधित करते हुए कहा—“नारी राष्ट्र की निर्मात्री है, हर नागरिक उसकी गोद में पलकर बढ़ता है, नारी को जागृत किए बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।”

मनुष्य एक सामाजिक एवं चिंतनशील प्राणी है पूर्णतः मर्यादित व अनुशासित मनुष्य, संस्थाओं एवं संपूर्ण राष्ट्र के निर्माण एवं विकसित करने का पूर्ण उत्तरदायित्व देश के स्थानीय समाजों का था और स्वस्थ एवं सशक्त स्थानीय समाजों का निर्माण एवं विकसित करने का पूर्ण उत्तरदायित्व मतदाता के लोकतांत्रिक अधिकारों को नियमित एवं सुनिश्चित करने वाली शासन तंत्र की संरचना एवं चुनावी पद्धति का था। मतदाता के अधिकारों को नियमित एवं सुनिश्चित करने वाली शासन तंत्र की संरचना का चुनाव पद्धति विकसित करने का पूर्ण उत्तरदायित्व देश के बुद्धिजीवियों का था। अब्राहम लिंकन के अनुसार— “जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन” इस प्रकार से प्रजातन्त्र में लोक निष्ठा और लोक भावना का समावेश होता है इसमें चुनाव का महत्व सर्वप्रथम और सर्वाधिक है। इससे लोक कल्याण प्रकट होता है। लोकतन्त्र को जनतन्त्र या प्रजातन्त्र ही कहते हैं, क्योंकि जनता के द्वारा ही यह तन्त्र बनता है। इसलिए बिना चुनाव का जो तन्त्र होता है। वह लोकतन्त्र या प्रजातन्त्र न होकर राजतन्त्र बन जाता है इस प्रकार से लोकतन्त्र जनता का प्रतिनिधि तन्त्र है। इसमें समस्त जन समुदाय की सद्भावना को प्रकट होता है।

महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो। सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जागृत करना है हमारे देश में सामाजिक कुरीतियों, बाल विवाह, दहेजप्रथा, बंधुआ मजदूरी, नशाखोरी आदि के प्रभाव से महिलाएं सामाजिक, आर्थिक व मानसिक दृष्टि से दबी रहती हैं। लेकिन मानव शक्ति का आधा भाग महिलाएं हैं, इसलिए कोई भी राष्ट्र महिलाओं की सहभागिता के बिना राष्ट्र के विकास का सपना पूरा नहीं कर सकता है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र में राजनीतिक विकास की गति को प्रोत्साहन करने में महिलाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है जहां तक भारत का प्रश्न है यहां पर प्राचीन काल से महिलाएं उपेक्षित रही हैं, उनका कार्य क्षेत्र का दायरा केवल घर-परिवार तक ही सीमित रहा है, जबकि सत्यता यह है कि आज महिलाएं अपने घर-परिवार का प्रबंध संचालन अत्यंत कुशलता पूर्ण ढंग से करती हैं। इसलिए वे किसी भी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रही हैं तथा अनेक प्रकार की कठिनाईयों को सहने व बाधाओं से झुझने के बाद महिलाएं पहले से अधिक राजनैतिक क्षेत्र में सशक्त व जागरूक हुई हैं।

* शोधार्थी राजनीतिशास्त्र, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता कम हो रही है वे महिला सशक्तिकरण से स्वावलम्बी बन रही हैं, जिससे महिलाएँ शिक्षित होकर सशक्त बन रही हैं। डॉ. आम्बेडकर के अनुसार— “नारी को राष्ट्र निर्मात्री बताया है।” नारी में वे शक्ति हैं, जो परिवार निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण तक करती हैं। इसलिए महिलाओं को शक्ति के रूप में प्राचीनकाल से लेकर आज तक माना जाता है नारी को देवी शक्ति के रूप में पूजा होती है। यह तो नारी शक्ति का आध्यात्मिक स्वरूप है। यही शक्ति प्रेरणादायी है, जो महिलाओं को इस रूप में स्वीकार करती है कि “यत्रे नार्यस्त पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता” जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। आशय यह है, कि जहाँ नारी का सम्मान होगा, वह राष्ट्र अपने आप शक्तिशाली, समृद्धशाली और वैभवशाली होगा। यही नारी शक्ति है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण को नई गति प्रदान करने के लिए भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र निर्माण की नीति अतुलनीय रही है। हर महिला दिवस पर ही नयी पहल अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2013 के अवसर पर लोकसभा में सदस्यों ने सुझाव दिया कि हर साल इस दिन रस्म अदायगी की बजाय महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण के मकसद से सालभर के लिए कोई ठोस मुद्दा अपनाकर उस दिशा में काम करना चाहिए।

सदन की बैठक शुरू होने पर सभापति हामिद अंसारी ने कहा कि, महिलाओं के प्रति प्रयासों और सतत् प्रतिबद्धता को सम्मान देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि, इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के लिए संयुक्त राष्ट्र का विषय है वादा निभाया जाना चाहिए। महिलाओं के खिलाफ हिंसा खत्म करने के लिए कदम उठाने का समय आ गया है। सभापति हामिद अंसारी ने, बालिका भ्रूण हत्या, झुठी शान की खातिर लड़कियों की हत्या महिलाओं के खिलाफ हिंसा के बढ़ते मामलों पर चिंता जताते हुए कहा आज, हालांकि—महिलाओं ने आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में उल्लेखनीय प्रगति की है लेकिन लिंग समानता अभी भी एक सपना है। उच्च सदन में अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर प्रश्नकाल की बजाय इसी मुद्दे पर विभिन्न दलों के नेताओं ने अपने विचार रखे।

महिला दिवस पर उनकी सुरक्षा सशक्तिकरण का मुद्दा उठा संसद में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आज संसद के दोनों सदनों में महिलाओं की वर्तमान स्थिति, उनकी सुरक्षा और सशक्तिकरण का मुद्दा उठा। राज्यसभा में प्रश्नकाल स्थगित कर विभिन्न राजनैतिक दलों के सदस्यों ने इसी मुद्दे पर चर्चा की और संसद व राज्यों के विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसदी भागीदारी वाले विधेयक को संसद से पारित कराने की मांग की और लोकसभा में भी समूचे सदन में महिलाओं के सशक्तिकरण और सुरक्षा का मसला उठाकर विशेष चर्चा की। राज्यसभा की बैठक शुरू होते ही सभापति हामिद अंसारी ने बताया कि, महिलाओं के सम्मान में आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जा रहा है और संयुक्त राष्ट्र संघ का इस साल का विषय है वादा निभाया जाना चाहिए, महिलाओं के खिलाफ हिंसा खत्म करने के लिए कदम उठाने का समय या गया है। महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों से चिंतित सभापति ने कहा कि आज महिलाएँ हर क्षेत्र में उल्लेखीय प्रगति कर रही हैं लेकिन लिंग समानता अभी भी एक सपना बनकर रह गया है।

सोनिया गांधी ने कहा है कि, पहले से ज्यादा महिलाएँ पंचायती और नगर निकायों में आ रही हैं और यह उनके सशक्तिकरण की ओर बड़ा कदम है। शिक्षित लड़कियों की जरूरत पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि, लड़कियों को अच्छी शिक्षा देना बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी है। अगर एक महिला शिक्षित होती है तो केवल परिवार नहीं, बल्कि पूरा समाज शिक्षित होता है।”

इसके अलावा राजधानी में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

आज महिला घर की चाहर दीवारी से निकलकर हर क्षेत्र में प्रगति की ओर अग्रसर है। उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के झंडे-गाड़ने शुरू कर दिए। जहाँ महिलाएँ समुद्र की गहराईयों को नाप आई, वहीं महिलाएँ आकाश की ऊँचाईयों को भी छू-आई हैं इसलिए दुनिया भर में महिला सशक्तिकरण की बातें की जाने लगीं।

सशक्तिकरण के लिए शिक्षा का होना बेहद जरूरी है इसके लिए बालिका शिक्षा के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए गए। सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं वहीं दूर-दूर के ग्रामीण इलाके में भी महिला जागृति के लिए साक्षरता अभिमान चालू किया गया लेकिन साक्षर होना ही महिला सशक्तिकरण नहीं है, वैसे महिला सशक्तिकरण के लिए हमारे यहाँ काफी प्रयास किए जा रहे हैं।

रोजगार कि दिशा में भी महिलाएँ आगे आई हैं। जवाहर रोजगार योजना और प्रधानमंत्री रोजगार योजना का भी महिलाओं ने काफी लाभ उठाया है। राजनीति के क्षेत्र में तो महिलाओं ने काफी सराहनीय कार्य किए हैं। लेकिन जैसे-जैसे महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता बढ़ी, देश में बदलाव की लहर आयी और वे स्वयं आगे बढ़कर महती भूमिका निभाने लगीं। आज महिलाओं में जागरूकता आ रही है और उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा है तो इस कारण उनका आर्थिक-सामाजिक विकास है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत में भागीदारी, आत्मनिर्भरता, महिला आयोग सहित तरह-तरह के महिला सेलों का गठन, महिलाओं से संबंधित कानून व धाराओं का बनना व उनका पालन होना, गैर-सरकारी संगठनों का सक्रिय होना जैसे कारकों ने महिलाओं की बदली तस्वीर में अहम भूमिका निभायी है।

73वें संविधान संशोधन के जरिए पंचायतों में 'आधी दुनिया' को 33 फीसदी आरक्षण दिया जा चुका है लेकिन आज भारी संख्या में महिलाएँ पंचायतों में चुन कर आ रही हैं। परंतु यह पूरा सच नहीं है। वास्तविकता यही है कि महिलाओं के नाम पर आज भी उनके पुरुष रिश्तेदार ही राजनीति करते हैं। हालांकि इस अधिनियम के जरिए अनुसूचित जनजाति की महिलाओं को भी आरक्षण दिया गया है लेकिन इस वर्ग की महिलाओं की हालत जस की तस है। राजनीति में महिलाएँ आज भी कठपुतलियाँ हैं, पुरुषों की "डमी" मात्र हैं।

हमें इस कारणों पर गंभीरता से सोचना होगा। कई अन्य राजनीतिक दलों की महिला सांसदों ने अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्ष मीरा कुमार ने कहा कि, संसद जो कि लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था है, ने आज स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण होगा और हमेंशा उनका सम्मान किया जायेगा।

जब भारत की लोकतांत्रिक उपलब्धियों को गिना जायेगा तो पंचायती राज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी और जब पंचायती राज की सफलता को माना जायेगा तब महिला आरक्षण और उसकी सफलता महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि-नारी की प्रगति के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है। समाज में नारी की स्थिति को समाज की प्रगति का मापदण्ड मानते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने प्रजातन्त्र में महिला सशक्तिकरण में आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का संचार किया उनमें "अत्त दीपो भव" "और शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो" के सूत्र वाक्यों द्वारा आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया।

सन्दर्भ सूची

1. कीर, धनंजय (1954) डॉ. बी.आर. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन पे.नं. 430.
2. डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय खंड 7 "नारी और प्रतिक्रान्ति" डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली (1995) पे.नं. 330.
3. तिवारी, अशुजा (2011) "महिला उद्यमिता" प्रकाशन ओमेगा पब्लिकेशन्स दरियागंज, दिल्ली पे.नं. 9.
4. सुनिल कुमार सिंह, 2013, "लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं की बदलती भूमिका" प्रकाशन मेखला प्रकाशन दिल्ली।
5. मनीषा रानी एवं डॉ. अनुपमा शर्मा 2013 "इक्कीसवीं शताब्दी में महिलाएं समस्याएं एवं संभावनायें" प्रकाशक-अल्फा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. गरिमा शर्मा, 2013, "महिला सशक्तिकरण नवीन भूमिकाएं एवं चुनौतियाँ" प्रकाशक पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, राजस्थान।
7. शर्मा, नीरज एवं श्रीवास्तव, 2013, "महिला सशक्तिकरण पर साक्षरता का प्रभाव" प्रकाशक अल्फा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।